328hi01

1

मनोविज्ञानः स्वयं और दूसरों को समझना

हम बहुधा क्रोध और प्रसन्नता की मुद्राओं का अनुभव करते हैं। हम में कविताएं, कहानियाँ और घटनाओं को याद रखने की अद्भुत योग्यता है। हम बहुधा नेताओं का अपने अनुयाइयों पर बहुत अधिक प्रभाव देखते हैं। हम बहुधा समूहों में अन्तःक्रिया करते समय द्वन्द्व और सहयोग का अनुभव करते हैं। किसी समय हममें से कुछ लोग अवसाद, अतिशय दुश्चिंता आदि से ग्रसित होते हैं। हम सभी इन घटनाओं के कारणों को जानने के उत्सुक रहते हैं और अपने तरीके से उनका अर्थ लगा लेते हैं। बहुधा हमारी समझ अपने विश्वासों और व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित होती है जो सही नहीं भी हो सकती है। इस प्रकार से एकत्रित ज्ञान का प्रयोग सिद्धान्तों के प्रतिपादन या लोगों के जीवन में आई समस्याओं को सुलझानें में नहीं किया जा सकता। हमें मानव मन और व्यवहार के कार्य करने का वर्णन करने के लिए निर्भरता योग्य और अपेक्षाकत उचित समझ की आवश्यकता है। मनोविज्ञान ऐसा विषय है जो मानव–व्यवहार के विभिन्न आयामों के प्रति अन्तर्दष्टि प्रदान करता है। इस पाठ में आप मनोविज्ञान के स्वरूप, मनोवैज्ञानिकों की क्रियाओं और मनोविज्ञान की विभिन्न शाखाओं के बारे में अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आपः

- मनोविज्ञान के अध्ययन की आवश्यकता और मनोविज्ञान की प्रकति को स्पष्ट कर सकेंगे;
- मनोवैज्ञानिक क्या करते हैं बता सकेंगे;

टिप्पणी

- एक विषय के रूप में मनाविज्ञान के विकास को संक्षेप में बता सकेंगे;
- मनोविज्ञान का अन्य समवर्गी विषयों से सम्बन्ध का उल्लेख कर सकेंगे; और
- मनोविज्ञान के परिवर्तित होते हुए रूप और मनोविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों का वर्णन कर सकेंगे।

1.1 मनोविज्ञान के अध्ययन की आवश्यकता

लोग मनोविज्ञान के अध्ययन से अनेक अपेक्षायें रखते हैं, इनमें से बहुत से अज्ञानता के कारण किन्तु कुछ सही भी होते हैं। विभिन्न मानसिक कार्य कैसे घटित होते हैं और लोग विभिन्न परिस्थितियों के कैसे व्यवहार करते हैं, इन बातों को समझने में मनोविज्ञान हमारी सहायता करता है। इसके सिद्धान्तों को विभिन्न परिस्थितियों में प्रयोग किया जाता है। मनोविज्ञान स्कूलों में सीखने–सिखाने की समस्याओं, घर में बच्चों के सामाजीकरण, समस्याओं के समाधान में संगठनों में लोगों को अभिप्रेरित करने और लोगों के व्यक्तिगत जीवन में भावात्मक समस्याओ को सुलझाने में सुसंगत है। इसके अतिरिक्त मानव जीवन में असंख्य अति उल्लेखनीय घटनायें होती हैं जिसमें मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों और प्रविधियों की आवश्यकता होती है। विभिन्न नौकरियों में लोगों का चयन, लोगों की योग्यता और अभिक्षमताओं का मापन, लोगों की कुशलता के विकास हेतु प्रशिक्षण, इस हेतु लक्ष्य निर्धारित और उन्हें प्राप्त करने हेतु अभिप्रेरित करना और उत्तम स्वास्थ्य के लिये जीवन शैली को उन्नत बनाना आदि मनोविज्ञान के कुछ अति लोकप्रिय अनुप्रयोग हैं। संक्षेप में एक व्यक्ति की अभिवद्धि और विकास को समझना, या एक समूह का कार्य करना मनोवैज्ञानिक अनुप्रयोगों के महतवपूर्ण क्षेत्र हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि अपने आपको तथा अपनी क्षमताओं को समझने और उन्हें वांछित दिशा में ढालने के लिये मनोविज्ञान के अध्ययन की आवश्यकता है। समूहों और संगठनों, जो मानव की सामूहिकता दर्शाते हैं, के स्तर पर भी एक ऐसा प्रयास किया जाता है। दूसरे शब्दों में, मनोविज्ञान का उपयुक्त अध्ययन और समझ हमें स्वयं और दूसरों को समझने तथा जीवन को उन्नत बनाने में सहयोग कर सकता है।

1.2 मनोविज्ञान का स्वरूप

मनुष्य किस प्रकार परिवेश की जानकारी प्राप्त करते हैं और वस्तुओं को देखते हैं?

लोग अनुभव कैसे प्राप्त करते और याद रखते हैं?

लोग कैसे सोचते, तर्क करते और समस्याओं का समाधान करते हैं?

लोग बुद्धि, व्यक्तित्व और अभिरुचि जैसी विभिन्न मनोवैज्ञानिक विशेषताओं में कैसे मतभिन्नता रखते हैं?

लोग जीवन की समस्याओं का सफलतापूर्वक समाधान कैसे करते हैं?

एक क्षण के अनुचिन्तन से यह स्पष्ट हो जायेगा कि उपर्युक्त सभी प्रश्नों में मस्तिष्क, मन या मानसिक क्रियायें और व्यवहार संलग्न होते हैं। कोई भी अवलोकन योग्य कार्य मस्तिष्क, मन और व्यवहार के समन्वय का परिणाम होता है। मस्तिष्ट की एक भौतिक संरचना होती है जबकि मन को मस्तिष्क का सहगामी माना जाता है। मनोविज्ञान उन नियमों और सिद्धांन्तों में सम्बन्ध बिठाने वाले नियमों और सिद्धान्तों को समझने का प्रयास करता है।

हम अपने दैनिक जीवन में विभिन्न प्रकार से व्यवहार करते हैं और मौखिक व दैहिक अनुक्रियायें एवं कार्य करने के लिए 'व्यवहार' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

मनोवैज्ञानिक मुद्दों के प्रति रुचि का एक लम्बा इतिहास है। फिर भी मनोवैज्ञानिक दश्य घटनाओं की समझ का आधुनिक अर्थों में औपचारी कारण केवल उन्नीसवीं शताब्दी में प्रारंभ हुआ। ऐसा दर्शन और प्राकतिक विज्ञानों के विकास से प्रभावित था। आजकल मनोविज्ञान को एक विज्ञान के साथ ही एक जीवन की गुणवत्ता बनाने वाले व्यवसाय के रूप में लिया जाता है। यह मुख्यतः विभिन्न मानसिक आयामों और व्यावहारिक क्रियाविधि पर केन्द्रित है। मनोवैज्ञानिक व्यावहारिक दश्य घटनाओं के कारण को समझने के लिये वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करते हैं और इनके सम्बन्ध में नियमों और सिद्धान्तों का निर्माण करते है। वे मानव व्यवहार से सम्बन्धित अनेक प्रश्नों को समझने का प्रयास करते हैं।

इस देश में अपने विकासक्रम में मनोविज्ञान ने बहुत दिशाओं में विस्तार लिया है और मानव जीवन के लगभग हर क्षेत्र को अपनी सीमाओं में आवेष्टित किया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मनोविज्ञान मन, मस्तिष्क और व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन है।

1.3 मनोवैज्ञानिक क्या करते हैं?

हममें से बहुतों की धारणा है कि मनोवैज्ञानिक किसी व्यक्ति के चेहरे को पढ़ सकते हैं और व्यक्ति की मनोरचना बता सकते हैं, मानसिक अपसामान्यता से ग्रसित लोगों का इलाज कर सकते हैं, किसी के भविष्य का अनुमान लगा सकते हैं और एक जादूगर की भांति किसी व्यक्ति का मन तुरन्त बदल सकते हैं। बाद में हम दखेंगे कि मनोवैज्ञानिक के हाथ मे कोई जादू नहीं है। मनोवैज्ञानिक कतिपय प्रक्रिया और उपकरणों का प्रयोग करके सूचना एकत्रित करता है और व्यवहार संभावित कारणों से सम्बन्ध के अनुमान और परिणाम निकालने का प्रयास करता है। मनोवैज्ञानिक के सम्मुख दो लक्ष्य होते हैं:

1. व्यवहार की जटिलताओं को समझना और व्याख्या करना, और
2. मनुष्य के जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने में योगदान करना।

मूल शोध पर कार्य करने वाले अकादमिक मनोवैज्ञानिक प्रथम लक्ष्य में रुचि रखते हैं। वे मानसिक प्रक्रमों और व्यवहार के विविध पक्षों सम्बन्धी परिकल्पनाओं का परीक्षण करने

टिप्पणी

का प्रयास करते हैं। वे प्रेक्षण और प्रयोग जैसी विभिन्न विधियों द्वारा सामान्य एवं आधारभूत सिद्धान्त एवं नियम विकसित करते हैं। वे व्यावहारिक सांवति का वर्णन करने, स्पष्ट करने, भविष्यवाणी करने एवं नियंत्रण करने का प्रयास करते हैं। इसके विरुद्ध दूसरे लक्ष्य का उपयोग व्यवसायी अनुप्रयुक्त मनोवैज्ञानिक करते हैं। ये मनोवैज्ञानिक ज्ञान का प्रयोग मनुष्य की विभिन्न समस्याओं को हल करने में करते हैं। वे परामर्श, चिकित्सा, व्यक्तिगत चयन, व्यवसाय निर्देशन, संगठनात्मक व्यवहार में विशेषज्ञ परामर्श (जैसे, टीमनिर्माण, नेतत्व प्रशिक्षण) उपभोक्ता सर्वेक्षण, मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन और विभिन्न कौशलों का प्रशिक्षण (जैसे संप्रेषण, स्व–प्रस्तुतीकरण) आदि क्रियाओं में व्यस्त रहते हैं। आजकल मनोवैज्ञानिक केवल अकादमिक संस्थाओं में शिक्षण और शोध कार्य में संलग्न नहीं रहते अपितु वे चिकित्सालय, विद्यालय, औद्योगिक केन्द्र, क्रीड़ा–संस्थानों, सैनिक प्रतिष्ठानों, सामुदायिक–केन्द्रों आदि में भी कार्य करते पाये जाते हैं।

पाठगत प्रश्न 1.1

सही विकल्प चुनियेः

1. मनोविज्ञान बहुत सही ढंग से परिभाषित होता हैः
   (क) मन का अध्ययन
   (ख) अचेतन मानसिक प्रक्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन
   (ग) मन, मस्तिष्क और व्यवहार का विज्ञान
   (घ) व्यवहार और ज्ञान का विज्ञान
2. मनोवैज्ञानिक निम्नांकित में से किसका प्रयोग नहीं करते?
   (क) साक्षात्कार
   (ख) किसी की हथेली की रेखायें पढ़ना
   (ग) प्रयोग
   (घ) प्रेक्षण

1.4 मनोविज्ञान का एक विषय के रूप में विकास

अति प्राचीन काल से मानव स्वभाव को समझना मनुष्य की मुख्य सरोकार रहा है। भारतीय चिंतिकों ने चेतना, आत्मा, मन, मानसिक क्रियाओं के सम्बन्ध वैदिक और उपनिषदिक काल से वहत सिद्धान्त विकसित किये थे। वेदान्त, सांख्य, योग, बौद्ध, जैन, सूफी इत्यादि दर्शन पद्धतियों ने मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के अनुकूल बहुत बड़े साहित्य की रचना की है। हम यह जान लें कि प्राचीन भारत में विद्वानों और शिक्षकों जैसे प्रथम

शताब्दी ईसा पूर्व के प्रसिद्ध चिकित्सक चरक, वात्सायन और कौटिल्य सभी ने मनोवैज्ञानिक नियमों के प्रयोग हेतु आधार तैयार किया। चूंकि मनोविज्ञान के विकास में सामाजिक और सांस्कतिक परिवेश का अपना महत्व होता है अतः इस बात को भारतीय संदर्भ में समझने की आवश्यकता है।

पश्चिम में उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में मनोविज्ञान ने एक वैज्ञानिक विषय का रूप ले लिया। सामान्यतः ऐसा माना जाता है कि सर्वप्रथम विल्हेम ऊन्ट ने 1879 में जर्मनी के लीपजिग विश्वविद्यालय में प्रथम मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापित की। वह इस दिशा में एक अगुवा थे और उन्होंने विश्व के विभिन्न देशों के विद्यार्थियों का आकर्षित किया जिन्होंने इस विषय को विस्तार देना प्रारम्भ किया। धीरे–धीरे मनोविज्ञान का अध्ययन कतिपय विचार धाराओं में संगठित किया जाने लगा। प्रमुख विचार धाराएँ निम्नलिखित हैं:

संरचनावादः एडवर्ड टिचनर द्वारा विकसित इस सिद्धान्त ने अपना ध्यान चेतना और उसके अवयवों पर केन्द्रित किया जैसे संवेदना, बिम्ब, भाव।

प्रकार्यवादः इसका विकास विलियम जेम्स ने किया। यह चेतना, स्मति, अस्तित्व से सम्बन्धित संवेग और अधिगम जीवों की अभिवद्धि और अनुकूलन पर केन्द्रित था।

व्यवहार वादः यह जे. बी. वाट्सन द्वारा विकसित किया गया। यह प्रेक्षण योग्य व्यवहार के अध्ययन पर केन्द्रित था।

गेस्टाल्टवादः इसका विकास वोल्फगांग कोहलर, कुर्ट कोफका और उनके विश्वसनीय परामर्शदाता मैक्स वदाईमार द्वारा किया गया। इसका मुख्य ध्यान चेतना की सम्पूर्णता था। प्रत्यक्षकरण अध्ययन का प्रमुख क्षेत्र था।

मनोविश्लेषणः इसका विकास सिग्मण्ड फ्रॉयड ने किया। यह अचेतन प्रक्रियाओं, द्वन्द्व, दुश्चिंता तथा मनोविकारों को महत्व देता है।

इन विचारधाराओं के कालखण्ड ने मनोविज्ञान के विविधीकरण का अवसर प्रदान किया। फिर भी यह अनुभव किया गया कि इनमें से कोई भी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं को पूर्णतः स्पष्ट नहीं करता। परिणामस्वरूप विभिन्न विचार आराओं के संप्रत्यों तथा वैज्ञानिक विधि का उपयोग प्रारंभ हुआ।

हाल के आन्दोलनों में सूचना सिद्धान्त तथा अभिकलनिय प्रतिरूपों पर बल शामिल है जिसने संज्ञानात्मक क्रान्ति को विशेष रूप से चिन्हित किया। अब मनोवैज्ञानिक कार्य को रूप प्रदान करने में तंत्रिका प्रक्रियाओं एवं सांस्कतिक प्रक्रियाओं को सशक्त अध्ययन किया जाता है।

आधुनिक भारत में 1916 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान का प्रारंभ हुआ। सेनगुप्ता प्रथम विभागाध्यक्ष थे। श्री गिरीन्द्रा शेखर बोस डा, सेनगुप्ता के उत्तराधिकारी हुये। 1924 में *इण्डियन साइकालोजिकल अशोसियशन* की स्थापना हुई और 1925 में

इण्डियन जरनल आफ साइकालोजी का प्रारंभ हुआ। 1940 में कोलकाता में *लुम्बिनी पार्क मेन्टल हास्पिटल* की स्थापना हुई। धीरे–धीरे पटना, लखनऊ और मैसूर जैसे विश्वविद्यालयों में मनोविज्ञान विभाग खोले गये। सातवें दशक में विभिन्न क्षेत्रों और संस्थाओं में मनोविज्ञान अधिक लोकप्रिय हो गया। शिक्षा, उद्योग, स्वास्थ्य, रक्षा और अन्य सम्बन्धित क्षेत्रों में मनोविज्ञान की आवश्यकता व्यापक रूप से अनुभव की जाने लगी है।

1.5 मुख्य मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य

- भौतिक पदार्थों और पशुओं से भिन्न मानव प्राणी आत्म–चेतन हैं और इसीलिये वे स्वयं अपना अध्ययन कर सकते हैं। अपने आपको व्यक्त करने की यह क्षमता मानवीय व्यवहार और तटसम्बन्धी अन्य प्रक्रियाओं के अध्ययन को अधिक जटिल बना देती है। मानवीय व्यवहार में विविध कारणों का समावेश इसके अध्ययन की जटिलता को और बढ़ा देता है। उदाहरण के लिये एक व्यक्ति अपने सहयोगी के बारे में यह शिकायत करता है कि वह अपना कार्य ठीक से नहीं करता/करती है। ऐसा व्यवहार अनेक कारकों–स्वतंत्र या संयुक्त रूप से – के कारण हो सकता है। ऐसा योग्यता के अभाव में, अभिप्रेरणा के अभाव में कार्यस्थल पर उपयुक्त वातावरण के अभाव में या घर की किसी समस्या के कारण हो सकता है। इनमें से किसी एक कारक अथवा उनके संयोजन के परिणामस्वरूप कार्य का निष्पादन कमजोर हो सकता है। यह अधिकांश व्यावहारिक सांवति के सम्बन्ध में सत्य हैं।
- इस प्रकार हम देखते हैं कि मनोवैज्ञानिक विज्ञान की विधियों का उपयोग करता तो है किन्तु वे भौतिक या प्राकतिक विज्ञानों की भांति प्रभावी कार्य नहीं कर सकतीं। उन्हें व्यवहार के अध्ययन में बहुत से कारकों को ध्यान में रखना पड़ेगा। वे भौतिक और सामाजिक विज्ञानों की विशेषताओं को भी काम में लाते हैं।
- फिर भी, मनोवैज्ञानिक भविष्यवाणिंया जटिल होती हैं और उनकी कुछ सीमायें होती हैं। उनकी परिशुद्धि प्रयुक्त उद्दीपनों, उपकरणों, पारिवेशिक परिस्थितियों और अध्ययन की जाने वाली मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के स्परूप द्वारा सीमित होती हैं। मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का गतिशील स्वरूप सामान्यीकरण को कठिन बना देता है। सामान्यीकरणों का स्वरूप संभावनायुक्त होता है। दूसरे शब्दों में वे संकेत करते हैं कि दी गई दशाओं के अन्तर्गत अमुक प्रकार की घटना घटित होने की संभावना हो सकती है।

मानवीय व्यवहार का अध्ययन करते समय निम्नांकित को ध्यान में रखने की आवश्यकता है:

(i) व्यक्तियों में परिपक्वता, अधिगम और बढ़ती आयु के कारण परिवर्तन पाये जाते हैं।

(ii) मानवीय व्यवहार किसी समय व्यक्तिगत विशेषताओं और परिवेश के गुणधर्म का सयुक्त कार्य है।

(iii) मनोवैज्ञानिक गुणधर्मों का मापन (जैसे व्यक्तित्व, बुद्धि, रुचि, अभिवति) सामान्यतः अप्रत्यक्ष और अनुमानों पर आधारित होता है।

(iv) सामाजिक व्यवहार के बहुत से आयाम निमय–शासित और संस्कति–विशेष होते हैं।

(v) मानवीय व्यवहार सामान्यतः विविध कारणों द्वारा निर्धारित होता है।

मनोवैज्ञानिक दश्य घटनाओं की समझ और विश्लेषण अनिवार्यतः मानव प्राणी के एक नमूने को लक्षित करते हैं। वे इन नमूनों के मूल में कतिपय सांस्कतिक और दार्शनिक पूर्वानुमानों को लक्षित करते हैं। इसी एक महत्वपूर्ण कारण से मानवीय व्यवहार को समझने के लिये अनेक प्रकार की विधियां या परिप्रेक्ष्य हैं।

आइये हम इन परिप्रेक्ष्यों के सम्बन्ध में अधिक अध्ययन करें:

जैविक परिप्रेक्ष्यः यह मानव प्राणियों को एक जैविक संरचना के अतिरिक्त कुछ नहीं मानता। व्यवहार को शुद्ध शारीरिक अर्थों में लेते हुए यह आन्तरिक शरीर क्रिया संरचना (जैसे मस्तिष्क, तंत्रिकातंत्र) को देखता है। एक भौतिक मत का समर्थन करके यह दावे के साथ कहता है कि समस्त व्यवहार का एक शरीर क्रिया आधार है। इस मत में व्यवहार को बनाने में तंत्रिका तंत्र की क्रिया तथा अनुवांशिक कारकों की भूमिका का महत्वपूर्ण सम्बन्ध है। यह माना जाता है कि समस्त सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रक्रियायें जैविक प्रक्रियाओं से निसत होती हैं। यह मत जटिल दश्य घटनाओं का विश्लेषण छोटी इकाइयों के आधार पर करना पसन्द करता है। इसने मस्तिष्क के कार्य करने के रहस्यों को खोल दिया है। नशीले पदार्थों का व्यवहार पर प्रभाव, मस्तिष्क के विभिन्न भागों पर विद्युतीय उद्दीपनों के परिणाम, ध्यान का प्रभाव और चेतना की परिवर्तित अवस्थाओं पर किये गये अध्ययनों ने अति रोचक परिणाम दर्शाये हैं।

व्यवहार परिप्रेक्ष्यः यह परिप्रेक्ष्य लोगों के कार्य करने के तरीके निर्धारण पर पारिवेशिक उद्दीपनों की भूमिका पर जोर देता है। इसका तर्क है कि हम जो हैं वह पूर्व के अधिगम का परिणाम है। अतः प्रकट या प्रेक्षणीय व्यवहार मनोविज्ञान की विषय वस्तु बन जाता है। यह कार्यविधि चेतना और स्वगत मानसिक अवस्थाओं को महत्व नहीं देती। इस परम्परा में प्रेक्षणीय व्यवहार और पारिवेशिक स्थितियों से उसका सम्बन्ध ही अध्ययन का केन्द्र बिन्दु है। इसके प्रतिपादक डब्लू.जे. वाट्सन और इसके समर्थक बी. एफ. स्किनर का विश्वास व्यवहार के वस्तुनिष्ठ अध्ययन में था। व्यवहारवाद के अनेक विकल्प हैं किन्तु सभी अधिगम और प्रेक्षणीय घटनाओं पर आधारित व्याख्या के उपयोग में समान रूप से रुचि रखते हैं।

मनोगतिक परिप्रेक्ष्यः बहुधा हम अपने कार्यों के कारणों से अनभिज्ञ होते हैं। सिग्मण्ड फ्रायड, मनोविश्लेषण के प्रतिपादक इस मत से निकट से जुड़ा है। व्यवहार के अभिप्रेरित प्रश्नों पर केन्द्रित होकर यह परिप्रेक्ष्य आन्तरिक प्रक्रियाओं की जांच करता है। इसका विश्वास है कि प्रत्येक व्यवहार का एक कारण होता है और वह कारण मन में पाया जाता

है। यह माना जाता है कि हमारे व्यवहार का अधिकांश जागति की सीमा के बाहर रहने वाली अचेतन प्रक्रियाओं द्वारा शासित होता है। यह मत मानसिक विकारों से ग्रसित लोगों के प्रेक्षण का उपयोग करता है और बचपन के अनुभवों को प्रौढ व्यवहार का निर्धारक मानता है। इस मत के अनुसार मनुष्य मूल रूप से काम और आक्रमक मूल प्रवत्तियों द्वारा चालित होता है। *हार्नी, एरिक्सन* और *एरिचफ्राम सरीखे नव–फ्रॉयडवादियों* ने विभिन्न रूप में मनोविश्लेषण का विकास किया है। इसी प्रकार *युंग* और *एडलर* ने भिन्न परम्परायें विकसित कीं।

संज्ञानात्मक परिप्रेक्ष्यः लोग विश्व के सम्बन्ध में कैसे जानते, समझते और सोचते हैं इस मत का यही केन्द्र है। हमारे व्यवहार में अधिकांश मानसिक या संज्ञानात्मक प्रक्रियायें जैसे प्रत्यक्ष करना, याद करना और सोचना शामिल हैं। हमारे व्यवहार को समझने में ये उतनी ही महत्वपूर्ण हैं जितने पारिवेशिक उद्दीपन। ये पारिवेशिक उद्दीपनों और प्राणी की अनुक्रियाओं में मध्यस्थ का कार्य करते हैं। यह संगठनात्मक और व्यवस्थित रूप में कार्य करते हैं। सक्रिय प्राणियों की भांति हम सूचना प्रक्रम करते हैं और उस पर अमल करते हैं। हमारे संज्ञान हमारे व्यवहार का रूप निश्चित करते हैं। हम परिवेश का प्रेक्षण करते हैं और उसकी व्याख्या के आधार पर प्रतिक्रिया करते हैं। हमारे विचार हमारे प्रकट कार्यों का कारण और परिणाम दोनों हैं। ये परिप्रेक्ष्य उभरते संज्ञानात्मक विज्ञान और कत्रिम वुद्धि के क्षेत्रें से सम्बन्ध रखता है।

मानवतावादी परिप्रेक्ष्यः बहुधा तीसरी शक्ति के रूप में इस परिप्रेक्ष्य को लिया जाता है। यह परिप्रेक्ष्य मनुष्यों को मूलतः अच्छा और उत्तरदायी प्राणी मानता है। यह भी माना जाता है कि व्यक्ति का व्यवहार मात्र पूर्व अनुभवों या वर्तमान परिस्थितियों से नहीं निर्धारित होता है। लोग चयन कर सकते हैं। ''स्वतंत्र इच्छा'' पर बल होता है। लोगों के कार्य के ढंग का निर्धारण करने में उनके व्यक्तिगत अनुभव और व्याख्यायें महत्वपूर्ण होते हैं। सिद्धान्तों का उपयोग केवल लोगों को समझने के लिये नहीं अपितु व्यक्ति के स्वयं के जीवन को समझने के लिये होना चाहिए। इस परिप्रेक्ष्य में आत्म सिद्धि और अध्यात्म की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह लोगों के जीवन इतिहास की प्रतिकति देखने का प्रयास करता है। यह लोगों के दश्य घटना या अनुभवजन्य जगत पर बल देता है। अब्राहम मासलो और रोजर्स इस मत के प्रतिपादक थे।

भरतीय परिप्रेक्ष्यः भारतीय चिन्तन पद्धति ने मानव जीवन की समस्याओं की चर्चा एक विस्तत परिप्रेक्ष्य में की है। एक मनुष्य परिवेश और दैवी शक्ति से दढ़ता से जुड़ा हुआ है और मन, शरीर और आत्मा के सामंजस्य पर बल देता है। लोग इच्छित पदार्थों की ओर अनजाने आकर्षित होते हैं जो समस्यायें पैदा करता है। लोग अपने सच्चे स्वरूप से अनभिज्ञ होते हैं। जीवन में कठिनाइयों का कारण अपनी क्षमताओं का ज्ञान न होना और स्वयं को भौतिक पदार्थों के साथ अपनी पहचान करने की गल्ती करना है। इसके समाधान के लिये योग की विभिन्न विधाओं का सुझाव दिया जाता है जैसे ज्ञान, कर्म, भक्ति और राजयोग। इसके अतिरिक्त इन सभी पद्धतियों और परम्पराओं में और अधिक विकास हुये हैं।

1.6 मनाविज्ञान का अन्य विषयों से सम्बन्ध

एक व्यवहारपरक विज्ञान होने के नाते मनोविज्ञान अनेक विषयों के साथ आन्तरिक रूप से जुड़ा है। मनोवैज्ञानिक खोजें जैविक विज्ञानों, सामाजिक विज्ञानों और मानवीकी की विभिन्न शाखाओं के साथ सहभागी रहती हैं। ज्ञान के ये सारे क्षेत्र व्यवहारपरक विज्ञानों के रूप में जाने जाते हैं। हाल के वर्षों में मनोविज्ञान का अन्य विषयों के साथ जुड़ाव स्वीकार किया गया है। आजकल बहु–विषयक एवं प्रतिकूल–विषयक अध्ययनों की ओर अधिक ध्यान दिया जाता है। आइये देखें कि किस प्रकार मनोविज्ञान दूसरे विषयों से सम्बन्धित है।

समाजशास्त्रः मानव व्यवहार का सामाजिक या समूहगत आयाम समजाशास्त्र और मनोविज्ञान के विद्याथिर्यो के लिये समान रुचि का विषय है। फिर भी दोनों के स्तरों और कार्य करने के तरीकों में भिन्नता है। दोनों विषय मानव–व्यवहार को सामाजिक सन्दर्भ में समझने में हमे सहायता करते हैं। दोनों सामाजिक दश्य घटनाओं जैसे नेतत्व, सामाजीकरण आदि का विश्लेषण करते हैं। फिर भी समाजशास्त्र विस्तत इकाइयों पर ध्यान देता है। यह समूहों और समुदायों के अध्ययन पर बल देता है, जबकि मनोविज्ञान व्यक्तियों पर अधिक ध्यान देता है। यह सूचना एकत्रित करने के लिये प्रयोगात्मक सर्वेक्षण और प्रेक्षण विधियों का प्रयोग करता है।

मानवशास्त्रः मानवशास्त्र मानव जाति के क्रमिक विकास और सभ्यता के विकास को समझने का प्रयास करता है। विभिन्न सांस्कतिक समूहों में सम्मिलित प्रेक्षण द्वारा लोगों के जीवन का विस्तत प्रेक्षण और अभिलेखन करके संस्कति की प्रक्रमों और विशेषताओं पर भी केन्द्रित होता है। इसके विपरीत, मनोविज्ञान मानव व्यवहार के बारे में सामान्य नियम प्रस्थापित करने का प्रयास करता है। अनेक बार यह सामान्यीकरण संस्कति द्वारा सीमित हो जाते हैं जिसमें शोध कार्य सम्पन्न किया जाता है। हाल में मनोविज्ञान और संस्कति का अति निकट का सम्बन्ध हो गया है। संस्कति की आवश्यकताओं के प्रतिक्रिया करने वाले मनोवैज्ञानिक अध्ययनों ने दर्शाया है कि संवेगों, आत्म संप्रत्यों, अभिप्रेरणों, व्यक्तित्व, मानकों, नैतिकता और विभिन्न संस्कतियों के अन्तर्गत बच्चों का पालन–पोषण के स्वरूप और अभिव्यक्ति में महत्वपूर्ण अन्तर और समानतायें पाई जाती हैं।

शिक्षाः शिक्षा और मनोविज्ञान के सम्बन्ध का एक लंबा इतिहास है। शिक्षा के सिद्धान्त और कार्य विभिन्न मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं जेसे अधिगम, स्मति, अभिप्रेरणा, व्यक्तित्व और बुद्धि से सम्बन्धित सिद्धान्तों और निष्कर्षों पर आधारित होते हैं। प्रभावी कक्षा शिक्षण और अधिगम तभी संभव है जबकि शिक्षक मानवीय विकास के सिद्धान्तों में प्रशिक्षित होते हैं। बच्चे क्रियाशील शिक्षार्थी होते हैं जो सूचनाये एकत्रित करते और तदानुसार कार्य करते हैं। इसलिये एक शिक्षक को अभिप्रेरणा और सम्प्रेषण की तकनीक में दक्ष होना चाहिये। बहुधा शिक्षकों को विद्यार्थियों और अभिभावकों को निर्देशन और परामर्श प्रदान करना

पड़ता है। इसी प्रकार विद्यार्थियों के मूल्यांकन के लिये मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के सिद्धान्त और कार्यपद्धति की आधारिक समझ होनी चाहिये।

जीव विज्ञान और तंत्रिका विज्ञानः मनोवैज्ञानिकों का एक प्रमुख चिन्ता व्यवहार के जैविक आधारों को समझना है। व्यवहार की समझ नियंत्रण और सुधार में बहुत सी नई खोजें मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र के कार्य के ज्ञान से आई हैं। मस्तिष्क के कार्यों का स्थानीकरण, तंत्रिका आवेग का स्वरूप और गुणधर्म, उत्तेजना और अभिप्रेरणा में जैविक कारक, मनोवैज्ञानिक क्रिया को निर्धारित करने वाले मस्तिष्क के विभिन्न भाग, आदि जांच–पड़ताल का उद्दीप्त क्षेत्र हैं।

पाठगत प्रश्न 1.2

(अ) निम्नलिखित कथनों के जोड़े बनाइयेः

(1) जैविक परिप्रेक्ष्य	(क) मनुष्य की सकारात्मक शक्ति
(2) व्यवहारिक परिप्रेक्ष्य	(ख) व्यवहार में मानसिक प्रक्रिया
(3) मनोगयात्मक परिप्रेक्ष्य	(ग) जैविक इकाई के कार्य
(4) संज्ञानात्मक परिप्रेक्ष्य	(घ) मन, शरीर और आत्मा का समन्वय
(5) मानववादी परिप्रेक्ष्य	(ङ) मन का अचेतन आयाम
(6) भारतीय परिप्रेक्ष्य	(च) पारिवेशिक विशेषताओं के कार्य

(ब) बताइये निम्नांकित कथन सत्य हैं या असत्य

(i) समाजशास्त्र और मनोविज्ञान मनुष्य के व्यवहार पर सामाजिक सन्दर्भ के प्रभाव को समझने में सहायता करते हैं। सत्य/असत्य

(ii) मानवशास्त्र मानवजाति के क्रमिक विकास और सभ्यता के विकास का अध्ययन करता है सत्य/असत्य

(iii) शिक्षा और मनोविज्ञान असम्बद्ध हैं। सत्य/असत्य

(iv) मानवीय व्यवहार का कोई जैविक आधार नहीं है। सत्य/असत्य

1.7 मनोविज्ञान के क्षेत्र

विषय के रूप में विकसित होकर मनोविज्ञान ने अनेक दिशाओं में विविधता उत्पन्न की है और विस्तार लिया है। प्रायोगिक और शरीर क्रियात्मक मनोविज्ञान से प्रारंभ हुआ और अब उसका जोर आधारिक मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं से हटकर मनोविज्ञान जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग होने लगा। आगे हम मनोविज्ञान की विभिन्न शाखाओं के बारे में अध्ययन करेंगे।

(a) **प्रयोगात्मक और संज्ञानात्मक मनोविज्ञानः** परम्परागत रूप से प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का सम्बन्ध संवेदना, प्रत्यक्षीकरण, सीखना, स्मति, अभिप्रेरणा, संवेग, इत्यादि मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं से है। इसका उद्देश्य प्रयोगात्मक विधि की सहायता से उक्त प्रक्रियाओं के अन्तर्गत आने वाले सिद्धान्तों को समझना है। लम्बे समय तक इस क्षेत्र का प्रभुत्व बना रहा। बढ़ती सूचनाओं और जानकारियों के कारण इस क्षेत्र का विविधीकरण हो गया। संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का नया क्षेत्र प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के सबसे निकट का क्षेत्र लगने लगा। इस क्षेत्र में प्रत्यक्षीकरण, समझने की शक्ति और सूचनाओं का उपयोग करने वाली प्रक्रियाओं की विभिन्न उद्देश्यों के लिये व्याख्या करने का प्रयास किया। इस प्रकार तर्क, समस्या समाधान, अवधान और तत्सम्बन्धी प्रक्रियाओं का परिष्कत विधियों एवं उपकरणों द्वारा विश्लेषण किया जाने लगा। यह शाखा व्यवहार के आधारभूत कारणों को समझने का प्रयास करती है।

(b) **शरीर क्रिया एवं तुलनात्मक मनोविज्ञानः** यह क्षेत्र व्यवहार के जैविक आधारों की व्याख्या करने से सम्बन्धित है। इसका विश्वास है कि समस्त व्यवहार कतिपय दैहिक प्रक्रियाओं तक सीमित किया जा सकता है। उदाहरण के लिये प्रमस्तिष्की वल्कुट और हाइपोथैलेमस में घटने वाली क्रियायें व्यवस्थित रूप से चिन्तन और अभिप्रेरणा से सम्बन्धित होती हैं। तुलनात्मक मनोविज्ञान चूहों, कबूतरों और बन्दरों जैसे पशुओं के व्यवहार के आयामों और जटिलताओं की खोज करता है तथा उनकी तुलना अन्य उपजाति से करता है।

(c) **वैकासिक मनोविज्ञानः** मनोविज्ञान का यह उपक्षेत्र सम्पूर्ण जीवन में आने वाले परिवर्तनों की समस्या का अध्ययन करता है। ये परिवर्तन शारीरिक, गत्यात्मक, संज्ञानात्मक, व्यक्तित्व, संवेगात्मक, सामाजिक और भाषात्मक क्षेत्रें में घटित होते हैं। इस परिवर्तन का अध्ययन उसी एक व्यक्ति के साथ लम्बे समय तक रहकर किया जा सकता है। विकल्प के रूप में विभिन्न आयु समूहों के लोगों का अध्ययन किया जा सकता है। प्रथम विधि को अनुदेर्ध्य तथा दूसरी को प्रतिनिध्यात्मक कहा जा सकता है। इस शाखा के महत्वपूर्ण भागों के अन्तर्गत बाल मनोविज्ञान, किशोर मनोविज्ञान, प्रौढ़ मनोविज्ञान हैं। वैकासिक मनोविकति विज्ञान का अध्ययन व्यवहार की समस्याओं से ग्रस्त बच्चों को पुनर्वासित करने में अत्यन्त महत्व रखता है।

(d) **समाज मनोविज्ञानः** मानव प्राणियों में एक दूसरे के साथ अन्तःक्रिया हमारे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है। समाज मनोविज्ञान हमारे व्यवहार पर दूसरे व्यक्तियों या समूहों के प्रभाव को समझाने का प्रयास करता है। दूसरे व्यक्तियों को देखना, धारणा बनाना, दूसरों को अपने दष्टिकोण बदलने के लिये समझाना, पूर्वाग्रह, अन्तर्वैक्तिक आकर्षण, समूह निर्णय, सामाजिक अभिप्रेरण और नेतत्व समाज मनोविज्ञान में महत्वपूर्ण विषय वस्तु है। जल्दी ही प्रयोगों और नये विशिष्टीकरण में दिलचस्पी दिखाई गयी है जिसे प्रयोगात्मक समाज मनोविज्ञान का नाम दिया गया है। समाज मनोविज्ञान विशेषकर समाजशास्त्रियों के योगदान से लाभान्वित हुआ है।

टिप्पणी

(e) **शिक्षा और विद्यालय मनोविज्ञानः** एक प्रायोगिक क्षेत्र के रूप में मनोविज्ञान की यह शाखा कक्षा व्यवस्था में शिक्षण और अधिगम की समस्याओं का समाधान करने में सहायता करता है। यह शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को अधिगम की स्थितियों में अधिक प्रभावी ढंग से व्यवहार करने में सहायता करती है। शिक्षा मनोवैज्ञानिक का अधिकांश कार्य, पाठ्यक्रम की योजना बनाना, शिक्षक प्रशिक्षण और अनुदेशों की रूपरेखा तैयार करने पर केन्द्रित होता है। अधिगम और अभिप्रेरण के मनोविज्ञान अधिगम सम्बन्धी आवश्यक सैद्धान्तिक खाका, और अनुभवजन्य आंकड़े, अधिगम के सिद्धान्त, पुनर्बलन, शिक्षण स्थानान्तरण, धारण और विस्मरण में सहायता प्रदान करता है। शिक्षा मनोवैज्ञानिक विद्यालय परिषदों को छात्रों की आवश्यकताओं, रुचियों और योग्यताओं को ध्यान में रखते हुये पाठ्यक्रम की योजना और सुझाव प्रदान करता है। स्कूल मनोवैज्ञानिक का कार्य स्कूल में अधिक तात्कालिक समस्याओं का समाधन करना है। स्कूल मनोवैज्ञानिकों का सम्बन्ध विशेषकर अधिगम की कठिनाइयों का निदान करने और उनका उपचार करने तथा व्यावसायिक तथा अन्य प्रकार के परामर्श देने से है।

(f) **परामर्श मनोविज्ञानः** एक परामर्श–मनोवैज्ञानिक उन लोगों को सहायता पहुंचाता है जो साधारण किस्म का सांवेगिक और निजी समस्याओं से पीड़ित होते हैं। वह व्यक्ति को उसके अपने संसाधनों का निजी समस्याओं के समाधान हेतु प्रभावी उपयोग करने में समर्थ बनाता है। वह वैवाहिक जीवन, बालापराध, विद्यालय में कुसमायोजन, नौकरी में विवाद जैसे सम्बन्धित क्षेत्रों में व्यवहार में परिवर्तन लाता है। परामर्श मनोवैज्ञानिक माडेलिंग, संवेदीकरण तथा तार्किक चिन्तन आदि की सहायता से सम्बन्धित व्यवहार को व्यवस्थित रूप से सही दिशा में ले जाने का प्रयास करता है।

(g) **चिकित्सा मनोविज्ञानः** चिकित्सा मनोवैज्ञानिक के बारे में आम धारणा एक डाक्टर की होती है जो मनोवैज्ञानिक विकतियों का निदान करते हैं और मनश्चिकित्सा की सहायता से उनका उपचार करते हैं। परन्तु वह वास्तव में एक डाक्टर नहीं होता है और उसे मनोरोगविज्ञानी, जिसे चिकित्सा की डिग्री मिली होती है, समझने की भूल नहीं करनी चाहिये। वह रोग से छुटकारा दिलाने के लिये विभिन्न तकनीकों का उपयोग करता/करती है ताकि लोग अपनी समस्याओं के कारणों को समझ सकें। एक चिकित्सा मनोवैज्ञानिक वस्तुतः व्यक्तित्व में परिवर्तन लाने का प्रयास करता है ताकि पीड़ित व्यक्ति अपनी परिस्थिति के साथ प्रभावी ढंग से अनुकूलन कर सके। वह व्यक्ति के विकास में ऋणात्मक या समस्यापरक पहलू को पहचानता है और उसे दूर करने का प्रयास करता है। उदाहरणार्थ एक चिकित्सा–मनोवैज्ञानिक दुर्भीति अर्थात् अनावश्यक डर का उपचार उन पुनर्बलकों को हटाकर करता है जो उस व्यवहार को बनाये रखते हैं, साथ ही वह रोगी के उपयोगी व्यवहारों को, जो समस्या के समाधान में सहायक हैं, पुनर्बलित करता है।

(h) **औद्योगिक तथा संगठनात्मक मनोविज्ञानः** इस क्षेत्र में काम करने वाले मनोवैज्ञानिक उद्योगों और अन्य संगठनों को कर्मचारियों के चयन, प्रशिक्षण तथा संचार,

उत्पादकता तथा अन्तर्वैयक्तिक तथा अन्तर्सामूहिक सम्बन्धों आदि से जुड़ी समस्याओं के समाधान में सहायता पहुंचाता है। संगठनात्मक विकास हेतु विभिन्न हस्तक्षेपों (जैसे टीम का निर्माण, संचार कौशलों का विकास, लक्ष्य निर्धारण, कार्य अभिकल्प) का उपयोग काम की दशाओं को सुधारने और उत्पादों को उत्तम बनाने में किया जाता है।

(i) **पर्यावरण मनोविज्ञानः** यह मनोविज्ञान का अपेक्षाकत एक नया क्षेत्र है जो मनुष्यों और पर्यावरण के बीच के सम्बन्धों का विशेषरूप से अध्ययन करता है। पर्यावरण–नियोजन, पर्यावरण–प्रत्यक्षीकरण, अभिवति, पर्यावरण की अभिकल्प रूपरेखा, पर्यावरण के प्रतिबल (जैसे भीड़, प्रदूषण, त्रासदी) तथा पर्यावरण के प्रति अभिवति का अध्ययन किया जा रहा है। इस सबका लक्ष्य पर्यावरण को बचाना और इसकी गुणवत्ता में सुधार लाना है।

(j) **अभियांत्रिक मनोविज्ञानः** आधुनिक विश्व में मानव जीवन को संचालित करने में विभिन्न प्रकार की मशीनों की प्रमुख भूमिका है। मशीन और मनुष्य की अन्तःक्रिया से कई प्रकार की समस्यायें पैदा होती हैं। अभियांत्रिकी मनोविज्ञान का मानव कारक अभियांत्रिकी, मनुष्य–मशीन–पर्यावरण व्यवस्था की क्षमताओं और सीमाओं को स्पष्ट करता है ताकि वह व्यवस्था सुरक्षापूर्वक और पूरी क्षमता से कार्य कर सके। इसलिये अभियांत्रिकी मनोवैज्ञानिकों का कार्य उपकरणों और मशीनों का अभिकल्प बनाने तथा कार्यस्थल की रूपरेखा बनाने में सहायता पहुंचाता है। सगणकों (कम्प्यूटर्स) के आने तथा सूचना तकनीकी में नवीन विकासों के कारण सम्बन्धित समस्याओं के समाधान के लिये अनेक नयी विधियों का उपयोग किया जा रहा है।

(k) **स्वास्थ्य मनोविज्ञानः** मनोविज्ञान की यह एक उभरती हुई शाखा है जो स्वास्थ्य के स्तर को उन्नत बनाने वाले कारकों को समझने पर केन्द्रित है। समसामयिक जीवन में स्वास्थ्य के संभावित संकटों (जैसे तनाव, पर्यावरण प्रदूषण, नग्नाशा) की संख्या बढ़ रही है। इन पर सफलतापूर्वक नियंत्रण पाने के लिये हमें स्वास्थ्य व्यवहार की प्रतिकति जैसे व्यायाम, ध्यान, सन्तुलित भोजन, शारीरिक क्रियाशीलता आदि की आवश्यकता है। स्वास्थ्य मनोविज्ञान शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के संवर्द्धन के लिये इन व्यवहारों की भूमिका की जांच करता है। यह अनुपयुक्त व्यवहार को सुधारने और रोगों की रोकथाम के तरीकों को खोजने का भी प्रयास करता है।

1.8 वर्तमानकालीन झुकावः मनोविज्ञान का बदलता रूप

आधुनिक जीवन में बढ़ती जटिलताओं के साथ ही मनोविज्ञान से अधिक बड़ी भूमिका निभाने की अपेक्षा है। मनोविज्ञान की विभिन्न शाखाओं के वर्णन से यह बात स्पष्ट है कि इसका क्षेत्र हमारे सामने आने वाले मुद्दों की विस्तत श्रंखला को अपने बारे में ले लेता है। इसका लक्ष्य विभिन्न क्षेत्रें में ज्ञान को बढ़ाना तथा उस ज्ञान का उपयोग समस्याओं के हल करने में करना है। ऐसे प्रयासों में मनोविज्ञान अनेक दिशाओं में बढ़ा है। कुछ आधुनिक झुकाव, जो इस विषय को रूप प्रदान करने में प्रमुख हैं, निम्नलिखित हैंः

1. **सांस्कतिक सन्दर्भ पर बलः** मनोवैज्ञानिक यह अनुभव करने लगे हैं कि मनोवैज्ञानिक दृश्य घटनाओं को विशेष सांस्कतिक सन्दर्भ में, जिनमें वे घटित होते हैं, समझा जा सकता है। अन्तः सांस्कतिक मनोविज्ञान और सांस्कतिक मनोविज्ञान के अध्ययनों से ज्ञात होता है कि बहुत से संप्रत्यय (जैसे आत्मा, नैतिकता) और अभ्यास (जैसे सामाजीकरण, जीवन कार्य) सांस्कतिक विशिष्ट हैं। इसलिये इन मुद्दों और प्रक्रियाओं को सांस्कतिक संदर्भ में समझना आवश्यक है।
2. **तंत्रिका विज्ञान की नई खोजेंः** हाल के वर्षों में मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र के अन्य भागों और जैविक कार्यप्रणाली के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण ज्ञान उपलब्ध हुआ है। इसने केवल मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के स्वरूप को समझने में ही सहायता की है अपितु विभिन्न रोगों का इलाज करने के रास्ते भी प्रदान किये हैं।
3. **बहु विषयक दिलचस्पीः** मनोवैज्ञानिक तथा अन्य वैज्ञानिक अब इस बात के कायल हैं कि मानव यथार्थ बड़ा जटिल है और कोई एक विषय उसे पूरी तरह नहीं समझ सकता। अतः मानव जीवन के विभिन्न पक्षों को समझने के लिये बहुविषयक प्रयास प्रारंभ हुये हैं। विशेष रूप से भाषा, व्यक्तित्व, संवेग और मूल्य के मुद्दों के अध्ययन में भाषा वैज्ञानिक मानवशास्त्री और संज्ञानात्मक वैज्ञानिकों का परस्पर सहयोग चल रहा है।

पाठगत प्रश्न 1.3

(क) सही विकल्प चुनियेः

1. निम्नांकित में से कौन सा मनोवैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक समस्याओं के समाधान में सबसे अधिक संलग्न हैः

   (क) परामर्श मनोवैज्ञानिक (ख) सामुदायकि मनोवैज्ञानिक

   (ग) उपचारात्मक मनोवैज्ञानिक (घ) समाज मनोवैज्ञानिक

2. मान लीजिये आप लोगों को एक दूसरे की और आकष्ट करने और मित्रता की ओर ले जाने वाले कारकों पर एक लेख लिख रहे हैं। आप निम्नांकित में किसकी लिखी पुस्तक पढ़ेंगेः

   (क) विकास मनोवैज्ञानिक (ख) शिक्षा मनोवैज्ञानिक

   (ग) समाज मनोवैज्ञानिक (घ) समुदाय मनोवैज्ञानिक

3. आप मनोवैज्ञानिकों के सेमिनार में भाग ले रहे हैं। आपको एक वार्ता शिशुओं की प्रत्यक्षात्मक योग्यता, दूसरी प्रौढ़ों के सामाजीकरण और तीसरी वद्धों के शारीरिक परविर्तनों पर सुनने को मिलती है। आप इन मनोवैज्ञानिकों के विशिष्टीकरण के बारे में क्या अनुमान लगाते हैं?

   (क) शरीर क्रियात्मक (ख) संज्ञानात्क

   (ग) सामाजिक (घ) विकासात्मक

1.9 मनोविज्ञान एक व्यवसाय के रूप में

अब तक आप मनोविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रें के बारे में अच्छी तरह जान चुके होंगे। वास्तव में आजकल मनोविज्ञान से कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा है। चाहे वह समाज से, सैन्य शक्तियों से या शिक्षा व्यवस्था से सम्बन्धित हो सभी के द्वारा एक मनोवैज्ञानिक की आवश्यकता अनुभव की जाती है। यह एक लोकप्रिय विषय बनता जा रहा है। मनोविज्ञान की उपाधि रखने वाले विभिन्न नौकरियां पा सकते हैं जैसेः

a) पी.जी.टी. मनोविज्ञान
b) परामर्शदाता–स्वतंत्र रूप से/विद्यालय/संस्था
c) विभिन्न परीक्षण सम्पादित करने वो परीक्षक
d) औद्योगिक संस्थान में मनोवैज्ञानिक
e) शोधकर्ता
f) स्वयंसेवी संगठन में कार्य
g) प्रवक्ता
h) चिकित्सा मनोवैज्ञानिक
i) बाल मनोवैज्ञानिक
j) स्वास्थ्य मनोवैज्ञानिक
k) विद्यालय मनोवैज्ञानिक
l) मानवीयकारक मनोवैज्ञानिक

उक्त सभी नौकरियों के लिये मनोविज्ञान के किसी विशेष क्षेत्र में विशेष योग्यता के साथ स्नातक उपाधि की आवश्यकता होती है।

आपने क्या सीखा

- मनोविज्ञान एक विज्ञान है जो मानसिक और व्यवहार जगत कार्यों का वैज्ञानिक विधियों से व्यवस्थित रूप से अध्ययन करता है।
- मनोवैज्ञानिक प्रत्यक्षीकरण, अभिप्रेरणा, संज्ञान, स्मति, अधिगम, व्यक्तित्व और बुद्धि जैसी प्रक्रियाओं का वर्णन, भविष्य कथन और नियंत्रण करता है।
- एक व्यावसायिक के नाते वे विद्यालयों, उद्योगों, चिकित्सालयों और संगठनों समेत विभिन्न व्यवस्थाओं की समस्याओं को हल करने में अपने मनोवैज्ञानिक ज्ञान का प्रयोग करते हैं।
- शिक्षा, मानवशास्त्र, समाजशास्त्र और जैविक विज्ञान जैसे विषयों से इसका निकट का सम्बन्ध है।
- मनोवैज्ञानिक मुद्दों और समस्याओं के अध्ययन को विभिन्न परिप्रेक्षों यथा व्यवहारगत,

संज्ञानात्मक, मनोगतिक, मानवतावादी, जैविक और भारतीय के रूप में जाना जाता है।

- परिप्रेक्ष्य का मूल विभिन्न दार्शनिक मान्यताओं में है और वे अनेक तरीकों से मानव स्वभाव का वर्णन करते हैं।
- एक विकसित होते विषय के रूप में मनोविज्ञान विभिन्न शाखाओं में विस्तार ले रहा है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में मनोवैज्ञानिक सेवायें देने में विशिष्ट है।
- तंत्रिका विज्ञान में विकास, संस्कति का अध्ययन और अन्य विषय से सहयोग महत्वपूर्ण तरीकों से मनोविज्ञान के विकास को रूप प्रदान कर रहे हैं।

पाठान्त प्रश्न

1. मनोविज्ञान के स्वरूप का वर्णन करें।
2. मनोविज्ञान में मनोगत्यात्मक परिप्रेक्ष्य को स्पष्ट करें।
3. मनोविज्ञान शिक्षा से किस प्रकार सम्बन्धित है?
4. नैदानिक मनोविज्ञान और उद्योगिक मनोविज्ञान के क्षेत्रें की विवेचना करें।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1

(1) ग (2) ख

1.2

(क) 1. ग 2. फ 3. ङ 4. ख 5. क 6. ग

(ख) (क) सत्य (ख) सत्य (ग) असत्य (घ) असत्य

1.3

1. ग 2. ग 3. घ

पाठान्त अभ्यास के संकेत

1. अनुभाग 1.2
2. अनुभाग 1.5
3. अनुभाग 1.6
4. अनुभाग 1.7